आर्योदय
ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE
- VEDA

Aryodaye Weekly No. 287 | ARYA SABHA MAURITIUS | 15th May to 30th May 2014

Qu'il y ait l'harmonie dans notre vie!

Om ! Madhumanmé parāyanam madhumat punarāyanam.
Tā no dévā dévatya yuvam madhumatskritam.

Rig. Véda10.24.6

Hé ashvinava / Hé āchāryopdéshak – O les grands sages/les érudits, et les conférenciers ou les prédicateurs!, **Mé** – mon, ma, mes, **Parāyanam** – allées/départs, **Madhumat / Madhumaya** – soit agréable / plaisant / sous d'heureux auspices, **Déva** – vous êtes des saints, **Tā yuvam** – vous deux, **Dévtaya** – par votre bénédiction, **Naha/No** – nous, **Kritam** – faites que, **Madhumatam** – soit sous les meilleurs auspices.

O les grands sages et les prédicateurs vous êtes tous des saints ! Que par vos bénédictions nous ayons une vie remplie de bonheur !

On peut faire de notre entourage un paradis ou un enfer. Cela dépend entièrement de notre comportement et agissement.

L'harmonie dans la famille n'est créée que par l'amour, l'affection, la compassion, le respect, le partage, la tolérance, la compréhension mutuelle et la magnanimité.

S'il y a une approche amicale de notre part envers tout le monde, l'environnement devient totalement agréable et si on agit autrement l'atmosphère se transforme en cauchemar.

D'après les enseignements des Védas, il nous est fortement conseillé de rendre notre vie paisible et heureuse.

Qu'il y ait de l'harmonie de toutes parts, que ce soit à la maison ou dans notre entourage.

En quittant la maison ou rentrant, nous, en tant que parents et chefs de familles, devons toujours nous montrer avenants envers tout le monde. Que nos parcours dans notre entourage soient sous les meilleurs auspices !

Conséquemment l'atmosphère de notre environnement (c'est-à-dire la maison et notre entourage) va se transformer en un havre de bonheur et de paix où il fera bon vivre.

N. Ghoorah

कन्या-रत्न

डा० उदय नारायण गंगू, ओ.एस.के, आर्य रत्न

ओ३म् ।। स तुर्वणिर्महाँ अरेणु पौंस्ये गिरेर्भृष्टिर्न भ्राजते तुजा शवः।
येन शुष्णं मायिनमायसो मदे दुध्र आभूषु रामयन्नि दामनि ।

ऋग्वेद १.५६. ३

शब्दार्थ – **स** - वह, **तुर्वणि** - शीघ्र सुखकारी, **महाँ** - महान्, **अरेणु** - क्षय रहित कर्म, **पौंस्ये** - पुरुषार्थयुक्त व्यवहार में प्रवीण, **गिरेर्भृष्टिः** - बादलों की ऊँची चोटियों के समान, **भ्राजते** - प्रकाशित होते हैं, **तुजा** - दुख के नाशक, **शवः** - उत्तम बल को प्राप्त करके, **येन** - जिससे, **शुष्णम्** - बलयुक्त, **मायिनम्** - अत्यन्त बुद्धिमान्, **आयसः** - विज्ञान से युक्त, **मदे** - आनन्द में, **दुध्रः** - बल से पूर्ण, **आभूषु** - सुशोभित, **रामयन्** - आनन्द प्रदान करते हुए, **नि** - निश्चय से, **दामनि** - सुखदायक ।

यह मन्त्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के छप्पनवें सूक्त की तीसरी ऋचा है। इसका ऋषि **अंगिरसः सव्यः** है और देवता 'इन्द्र' है।

प्रस्तुत मन्त्र का भाव यह है कि उत्तम गुणों से सुसज्जित सुशील और सुशिक्षित कन्या अपने ही गुण-स्वभाव के अनुरूप युवक से विवाह करे।

वैदिक युग में कन्याएँ बड़ी सम्मानित थीं। समय बदलता गया। काल के साथ ही नारियों की स्थिति में भी परिवर्तन आता रहा। महाभारत युद्ध के पश्चात् आर्यों का साम्राज्य खंडित हो गया। कालान्तर में विदेशी आक्रमणकारी भारत में घुस गये। विधर्मियों ने स्त्रियों की दुर्दशा की। परिणाम स्वरूप पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह की कुप्रथाएँ प्रचलित हो गईं। विद्या से वंचित रखे जाने के कारण कन्याओं को अविद्यांधकार ने ग्रस्त लिया। अशिक्षित माताओं के कारण हिन्दू समाज जर्जरित हो गया। शक्तिस्वरूपा स्त्री अबला बन कर रह गई। माता-पिता के लिए कन्या अभिशाप बन गई।

शास्त्रों में कन्या को रत्न माना गया है। कन्या के लिए **'कन्यारत्नं'** शब्द प्रयुक्त होता है। ऋग्वेद की इस ऋचा में यह चर्चा है कि माता-पिता कन्या को रत्न बनाने के लिए पूर्ण प्रयत्न करें। कन्या को निपुण, चुस्त, सुख देनेवाली, महान् पदार्थों को नष्ट न करनेवाली, मेहनती, मेघ-समसरस, मेघ की ऊँची ऊँची चोटियों के समान यशस्विनी, सबके दुःखों को दूर करनेवाली, बलशालिनी, बुद्धिमती, विशिष्ट ज्ञान को धारण करनेवाली, स्वयं प्रसन्न रहकर दूसरों को आनन्दित करनेवाली, सदा अलंकृत तथा परिवार को सुख देनेवाली सुशील और सौम्य बनायें।

सामान्यतया इस मंत्र का देवता इन्द्र है वैदिक शब्दों का एक ही अर्थ नहीं होता। **'अनेकार्थकः धातवः'** के अनुसार वेदों के मंत्रों के अनेक अर्थ होते हैं। निरुक्ताचार्य ने लिखा कि वेदों को जानने के लिए **'भयो वित्'** अर्थात् असीम ज्ञान वाला होना चाहिए। वेदों के शब्दों का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है। अतः महर्षि दयानन्द ने इस मन्त्र को कन्यापरक लिया है, क्योंकि कन्या सबसे बड़ा ऐश्वर्य है। यही कारण है कि वर विवाह में **'भगस्ते हस्तमग्रभीत्'** या **'गृभ्णामि ते सौभगत्त्वाय हस्तम्'** कहता है। वर अपने सौभाग्य के लिए कन्या का पाणिग्रहण करता है। कन्या में सन्तति रूपी धनैश्वर्य छिपा है। वंश की वृद्धि सबसे बड़ा सौभाग्य है। कई आत्मायें माता-पिता को प्रसिद्ध कर देती हैं।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

देवतुल्य माता-पिता

माता-पिता देवता माने जाते हैं। वे जीवन पर्यन्त अपनी संतानों को सुख, शान्ति और आनन्द देते रहते हैं, कभी भी उनका अहित नहीं चाहते हैं, बल्कि अपने बच्चों की रक्षा निमित्त अपना जीवन समर्पित कर देते हैं। उनकी आवश्यकताएँ पूर्ण करने में अपने प्राणों का निछावर कर देते हैं। संसार की कोई भी संतान अपने माता-पिता से उऋण नहीं हो सकती है।

माता-पिता की छाया ही संतानों का स्वर्ग है। जैसे हम परमात्मा को माता-पिता के रूप में ध्यान करते हैं, वैसे ही हमें अपने माँ-बाप को देवता के रूप में मानना चाहिए। एक बच्चा अपने माता-पिता की गोद में पलकर ज्ञानी तथा अनुभवी होता जाता है। अपने गुरुजनों की शरण में जाकर श्रेष्ठ विद्वान् बन जाता है। उसकी सफलता इन्हीं देवताओं के तप-त्याग अनुभव और कठोर परिश्रम पर आधारित होती है, इसीलिए हर एक बच्चे को जीवन भर हृदय से शिष्टता पूर्वक अपने माता-पिता तथा गुरु जनों का अभिवादन करना चाहिए। माता पिता का आदर-सम्मान करने से संतानों की प्रतिष्ठा बढ़ती है। माता-पिता पालनहार होते हैं, अपने बच्चों से बड़े होते हैं फिर भी अपनी संतानों से स्नेह, प्यार और दुलार के साथ उनके संग मिलकर रहना पसन्द करते हैं, क्योंकि माँ-बाप और बच्चों में अटूट प्रेम और सम्बन्ध होता है।

माता-पिता के तप, त्याग, परिश्रम, सहायता और सेवा-शुश्रुषा के बिना बच्चों की रक्षा असम्भव है। माँ-बाप इतने उदार और दयालु होते हैं कि वे स्वयं भूखे रहकर अपनी संतानों का पेट भरने की कोशिश करते रहते हैं। इसीलिए देवता स्वरूप माता पिता को ढेर सारा प्यार देना और उनकी रक्षा करना सभी पुत्र-पुत्रियों का परम धर्म है।

संसार में जो व्यक्ति स्वार्थी बनकर अपने देवतुल्य माता-पिता के उपकारों को भूल जाता है, उनकी दुखद स्थिति में मदद नहीं करता है, वह कर्त्तव्यहीन बनकर जीवन भर पाप की गठरी ढोता रहता है। जीवन भर माता-पिता की तड़प उस पर असर करती रहती है, क्योंकि जो जैसा व्यवहार करता है, वह वैसा ही फल भोगता है। हमारे धार्मिक ग्रन्थों में वर्णित है कि माता-पिता को अपना प्रेम बाँटने से तथा उन्हें प्रसन्न रखने से उनका आशीर्वाद मिलता है। वास्तव में माँ-बाप का आशीर्वाद अमृत के समान होता हैं। जैसे अमृत का सेवन करने से जीवन की रक्षा होती है, वैसे ही माता-पिता की सेवा करने से प्राणों की शक्ति बढ़ती जाती है।

आज यह देखा जाता है कि बहुत से बच्चे अपने बचपन में माता-पिता से अधिक प्रेम बढ़ाते हैं। युवावस्था में पदार्पण करते ही माँ-बाप के प्रति उनका प्रेमभाव घटने लगता है। गृहस्थी बनकर वे अपने माता-पिता से अलग जीना पसन्द करते हैं। उनके वृद्ध माता-पिता घर में अकेले पड़े रहते हैं। उनकी दयनीय दशा में देख-भाल करने वाला एक भी संतान नहीं रहती, इसी कारण उन्हें अनाथालय में शरण लेनी पड़ती है। क्या वृद्धावस्था पाना कोई अभिशाप है? हमारे युवावर्ग यह भूल जाते हैं कि एक दिन वे भी वृद्ध होंगे। जैसा व्यवहार वे अपने पूजनीय माता-पिता के साथ करते हैं, उनके नकलची बच्चे भी उनके साथ वैसा ही व्यवहार करेंगे।

मातृदिवस के अवसर पर हम सभी पुत्र-पुत्रियों से यही आग्रह करते हैं कि आप अपने तपस्वी माता-पिता को ढेर सारा प्यार दें, उन्हें इतना प्रसन्न रखें कि उनके आशीर्वाद से जीवन सफल हो जाए। यह ध्यान रहे कि जन्मदात्री माता और पालनकर्त्ता पिता का आदर सम्मान करने वाले तथा प्रेम देने वाले सपूतों का कल्याण होता है और तिरस्कार करने वाले दुष्ट बच्चों का कभी हित नहीं होता है।

ईश्वर से यह प्रार्थना है कि हमारे देश के सभी असहाय, दुखी, रोगग्रस्त माता-पिता को बच्चों का भरपुर प्यार और सहयोग प्राप्त हो। सभी वृद्ध तपस्वी जनों को संतानों की सेवा नसीब हो ताकि इस देश में कोई भी माता-पिता असहाय, दीन, दुखी और असुरक्षित महसूस न करे।

बालचन्द तानाकूर

मोदी जी की शानदार विजय

पिछले कई वर्षों से **नरेन्द्र मोदी जी** ने भारत के पश्चिमी प्रान्त गुजरात

राज्य के मुख्य मंत्री के पद पर रहकर गुजरात प्रान्त की काया पलट दी। उम्मीद ही नहीं, अपितु अटल विश्वास है कि समूचे भारतवर्ष के लिए वैसा ही काम करेंगे और देश की बिगड़ी छवि का रूप ही बदल देंगे। मोदी जी ऐसी धातु से बनें है क्योंकि अभूतपूर्व विजय पाने के बाद बडोदरा के अपने प्रथम भाषण में कहा 'सब के साथ, सब का विकास,' 'शरीर का हरेक कण और समय का हरेक क्षण मैं देश के लिए कुर्बान कर दूँगा।'

दुनिया भर के लोग उनकी शानदार विजय पर बधाइयाँ दे रहे हैं। हमारे छोटे भारत मोरिशस के प्रधान मंत्री डा० नवीनचन्द्र रामगुलाम ने बधाई देते हुए कहा कि हमारा विशेष सम्बन्ध है भारत से, इस लिए भारत के सम्मान से हम भी सम्मानित होते हैं और जब भी भारत का अपमान होता है तो हम भी अपमानित होते हैं। हमारा खून का सम्बन्ध है भारत से। जब दुनिया वाले बोलते हैं भारत सबसे बड़ा भ्रष्ट देश है तो हमारा सिर नत हो जाता है। भारत की स्वतन्त्रता के बाद पहली बार किसी एक पार्टी को इतना बड़ा बहुमत प्राप्त हुआ है। एकेले २/३ मत प्राप्त हुआ और उसकी मित्र पार्टियों को मिला कर ५४३ वाली लोक सभा में ३३३ सीट प्राप्त हुई।

यह दूसरी बार है जब कि जनता पार्टी सरकार चलायेगी। पहली बार श्री अटल बिहारी जी के प्रधान मन्त्रीत्व पर देश की बागडोर सम्भाल चुकी है। यह दूसरी बार इतना भारी अधिकार प्राप्त हुआ है।

सोनिया गांधी और राहुल गांधी के प्रधानत्व व उप-प्रधानत्व में कॉंग्रेस पार्टी की बुरी तरह हार हुई । कॉंग्रेस वह पार्टी है जिसने भारत वर्ष को सदियों की दासता के बाद मुक्त करवाया था। गांधी और नेहरू की पार्टी को ऐसी हार देखनी पड़ेगी कि किसी ने शायद स्वप्न में भी नहीं देखा होगा।

मोदी जी ने अपने चुनाव क्षेत्र के मतदाताओं को धन्यवाद देते हुए कहा था, 'दुनिया का सब से बड़ा लोकतन्त्र भारत की विजय हुई, अच्छे दिन आने वाले हैं । आपने हमें राज्य चलाने का सामर्थ्य दे दिया, अब देश को चलाने के लिए आप सभी का सहयोग चाहिए। यही माँग कर रहा हूँ।'

गुजरात की धरती में वह शक्ति है। जो शक्ति दयानन्द को दी थी, जो शक्ति गांधी को दी थी, वही शक्ति नरेन्द्र मोदी को देगी।

पुनश्च -

हमारे प्रधानमंत्री डा० नवीनचन्द्र रामगुलाम को शपथ ग्रहण समारोह में उपस्थित होने का औपचारिक निमंत्रण मिला है जो आगामी २६ मई, २०१४ को दिल्ली के राष्ट्रपति भवन में लगेगा। यह मोरिशस के लिए सौभाग्य की बात है।

सत्यदेव प्रीतम

पृष्ठ १ का शेष भाग

ओ३म् ।। स तुर्वणिर्महाँ अरेणु पौंस्ये गिरेर्भृष्टिर्न भ्राजते तुजा शवः। येन शुष्णं मायिनमायसो मदे दुध्र आभूषु रामयन्नि दामनि ।

ऋग्वेद १.५६. ३

अतः महर्षि दयानन्द सरस्वती कन्या को अत्यधिक महत्त्व देते हैं। हमारे पूर्व ऋषियों ने तो यहाँ तक कहा कि कन्या रत्न है। कन्या को रत्न बनाने के लिए माता-पिता को बाल्यावस्था से ही उसे सुसंस्कृत करना चाहिए। 'रत्न' की परिभाषा में निघण्टु की व्याख्या है, **'रमयति हर्षयति इति रत्नम्'** – जो आनन्द और प्रसन्नता प्रदान करे, वही रत्न है। निरुक्त में **'हिताय रमते इति रत्नम्'** कहा गया अर्थात् जो सदा हित के लिए ही हो, वह रत्न है। अतः कन्या ऐसी ही होनी चाहिए।

आज संस्कारहीन होने के कारण बहुत सी कन्याएँ स्वच्छन्द दिखाई देती हैं। स्वतंत्रता तथा स्वच्छन्दता में अन्तर है। स्वच्छन्दता में उद्दंडता का भी आभास हो सकता है। स्वतंत्रता में समर्पण की भावना अधिक है। महर्षि दयानन्द ने कन्या को इसलिए स्वतंत्रता प्रदान की, जिससे वे विदुषी बनकर उत्तम माता बनें और अपनी प्रजा को भी उत्तम बना सकें। आज का समाज नारी की मर्यादा को भूल चुका है। अतः महर्षि के इस उपदेश की व्याख्या अत्यन्त आवश्यक है। प्रस्तुत मन्त्र कह रहा है कि कन्या को रत्न के समान होना है।

स तुर्वणिर्महाँ - वह कन्या महान्, अत्यन्त निपुण तथा शीघ्र कार्य करने वाली होनी चाहिए। पञ्चतन्त्र में एक बहुत सुन्दर उक्ति आती है, **'क्षिप्रं अक्रिय-भाणस्य कालं पिबति तद् रसम्'** – जो जल्दी कार्य नहीं करता, उसके फल के रस को समय पी जाता है। अतः दीर्घसूत्री होना विफलता के लक्षण होते हैं। **'स'** शब्द ऐश्वर्य के लिए आया है। जो गृहस्थी को उत्तम बनाना चाहे, उसे अपनी कन्या को कुशल बनाना चाहिए। तभी माता-पिता ऐश्वर्यशाली कहलायेंगे। किसी एक से बहुत सुन्दर उक्ति सुनने को मिली कि कन्या को कभी भी पराया धन मत कहो। वह जहाँ रहती है, वहीं का धन है। अपने माता-पिता के घर में रहती है तो वह अपना ही घर है। वह ससुराल जाती है, तब अपने घर से अपने दूसरे घर में ही जाती है। माँ के घर का ऐश्वर्य कहीं बाहर नहीं है, उस कन्या के ही पास है, चाहे वह पतिकुल हो, या मातृकुल। अतः पुत्री को महान् समझकर उसे योग्य बनाना चाहिए।

अरेणु पौंस्ये - क्षय न करे। सदा आगे बढ़े, परिश्रम करके उन्नति करे।

कई कन्यायें कहती हैं, मेरे हाथ में बरकत नहीं है। ऐसा क्यों कहती हैं ? इसलिए कि उनको धन का विनिमय नहीं आता, क्योंकि वे पुरुषार्थ करना नहीं जानतीं। कन्या को धन का सदुपयोग करना आना चाहिए। कष्ट आने पर नारी को सबसे आगे रहकर पुरुष को आत्मिक बल प्रदान करनेवाली होना चाहिए।

गिरेभृष्टिः – बादल जैसे पानी से भरकर ऊँचाई से बरसते हैं, ऐसे ही कन्याओं को यशस्विनी होकर सरस होना चाहिए। वह अपनी सरसता सब पर बरसाती रहे। तभी अपना परिवार सरस बनकर आनन्दित रह सकता है। पुरुष को भी साथ देना चाहिए। अकेली माँ, कन्या, पत्नी कुछ भी नहीं कर सकती । ऐसे ही पुरुष भी अकेला परिवार को सुखी नहीं कर सकता, चाहे पिता हो; या पति। अतः स्त्री-पुरुष दोनों का बन्धन ही ऐश्वर्य वर्द्धक होकर संसार को सरस बना सकता है ।

भ्राजते – अर्थात् वर-वधू प्रकाश से पूरित हों। सूर्य को बादल ढक देते हैं, परन्तु यह भी सत्य है कि बादलों को बनानेवाला भी सूर्य ही है। जब बादल उसको ढक लेते हैं तब सूर्य भी उनकी सरसता का आनन्द लेता है । तभी तो वर्षा के बाद इन्द्रधनुष का रूप लेकर सातों रंग दिशाओं में फैला देता है। सात रंग खुशियों का प्रकाशन करते हैं। कन्या को भी सूर्य जैसा वर प्राप्त करना चाहिए। महर्षि दयानन्द अपने ग्रन्थ 'संस्कार विधि' में लिखते हैं, कन्या उत्तम, बुद्धिमान् तथा विद्वान् वर को ही वरण करे।

तुजा शवः – अर्थात् श्रेष्ठ बल से युक्त होकर दुख का नाश करने वाली होना। कन्या में इतना शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, व बौद्धिक बल होना चाहिए कि वह किसी प्रकार के और किसी के भी दुःख को दूर कर सके। दुख दूर करने के बाद बार-बार सुनाये नहीं । सुनाने से उसका फल समाप्त हो जाता है। बल ही मनुष्य को उत्साह प्रदान करता है। अतः उत्तम बल की प्राप्ति हेतु ईश्वर पर विश्वास, श्रद्धा, भक्ति, तथा दृढ़ संकल्प का होना भी आवश्यक है। यही मानव को हर स्थिति में शक्ति का संचार करके सफलता प्रदान करते हैं। अतः वेद ने कहा – **तुजाशवः** – इतनी शक्ति को धारण करे कि वह स्वयं भी प्रसन्न रहे तथा दूसरों के दुःखों का भी नाश करे ।

मायिनम् – कन्या को अतीव बुद्धिमती होना चाहिए। बुद्धि ही ऐश्वर्य का कारण है। **'अविवेकः परमापदां पदम्'** अर्थात् बुद्धिहीनता ही विपत्ति का पहला पग है। बुद्धिहीनता ही विद्वेष का कारण है। महर्षि दयानन्द ने भी सत्यार्थप्रकाश में अविद्या से ही राग द्वेषादि की उत्पत्ति बताई है। संसार में अविवेक बढ़ रहा है । सोच-विचार कर कार्य करने वाले नहीं के बराबर रह गये। दस में एक बुद्धिमान् होता है। उसको कोने में फैंककर नौ लोग एक हो जाते हैं। संस्कार-दोष के कारण मनमानी करते हैं। अतः कन्याओं को माँ बनने से पूर्व, पत्नी की स्थिति में ही अतीव बुद्धिमति हो जाना चाहिए, ताकि परिवार के सभी सदस्यों का मार्ग दर्शन बुद्धिपूर्वक करने में समर्थ हो सके।

आयसः - अर्थात् विज्ञान से युक्त होना। कन्या को प्रत्येक कार्य को सूक्ष्मदृष्टि से करना चाहिए। उसे मनो वैज्ञानिक होना चाहिए। मनोवैज्ञानिकता व्यक्ति को अतीव प्रबुद्ध बना देती है। कन्याओं को तो विशेषतया इसका ज्ञान होना आवश्यक है। गृहस्थी में स्त्री जाति पर पचहत्तर प्रतिशत भार होता है। गृहस्थाश्रम में विविध प्रकार के फूल-पौधे होते हैं। गृहस्थाश्रम में सबकी सेवा विविध प्रकार से होती है। इसके लिए गृहस्थ को सदा प्रबुद्ध होना आवश्यक है।

मदे – अर्थात् आनन्द में। ज्ञानी होने पर ही कन्या आनन्द का संचार कर सकती है। यह सर्वविदित है कि सब को खुश करना कठिन होता है, पर समर्पण भाव से सब कुछ साध्य है। इसके लिए आत्मबल का होना अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए प्रस्तुत मन्त्र में कहा गया – दुध्रुः अर्थात् बल से युक्त होना। **'दुध्र'** वह बल है, जो हृदय को दुर्बलता से दूर रखता है। तनाव मनुष्य को रुग्ण, व निर्बल बना देता है। यह हृदय को कमज़ोर करके मानव को मृत्यु तक पहुँचा देता है। अतः कन्या को चाहिए कि वह स्वयं आत्मबली बने तथा परिवार को भी बल प्रदान करे।

क्रमशः

ओ३म्

आर्य सभा मॉरीशस

आर्य सभा मॉरीशस से सम्बद्ध आर्य समाज / आर्य महिला समाज के प्रधान, मन्त्री, कोषाध्यक्ष तथा सभी सदस्य/सदस्याओं की सेवा में

सत्यार्थप्रकाश मास - जून का पूरा महीना

सेवा में सूचित हो कि आगामी १२ जून २०१४ को महर्षि दयानन्द सरस्वती विरचित सत्यार्थप्रकाश जयन्ती है। इस संदर्भ में आर्य सभा मॉरीशस ने जून महीने को "सत्यार्थप्रकाश मास" घोषित किया है। अतः समस्त शाखा समाजों के अधिकारियों, हिन्दी पाठशाला के शिक्षकों, पुरोहित-पुरोहिताओं और आर्य परिवारों से निवेदन है कि आप बड़े भव्य रूप से इस **कालजयी ग्रन्थ** के पठन-पाठन, उपदेशों और प्रवचनों का आयोजन करें ताकि जून महीने के अन्त तक हमारे देश के शहरों और गाँवों में सत्यार्थप्रकाश जैसे महान ग्रन्थ का पूरा प्रचार-प्रसार हो।

साथ ही प्रत्येक शाखा समाज में विधि-विधान पूर्वक यज्ञों का अनुष्ठान हो/ स्वामी जी द्वारा धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों पर प्रकाश डालें और युवा वर्गों को उनकी रचनाएँ अध्ययन करने के लिए प्रेरित करें ताकि हमारी युवा पीढ़ी अपूर्व ज्ञान प्राप्त करके, श्रेष्ठ सज्जन और आदर्श आर्य सदस्य बनें ।

आशा है कि आप सभी लोग अपना पूरा सहयोग देकर सत्यार्थप्रकाश मास को सफल बनाएँ ।

ह. रामधनी
मन्त्री

To All Presidents, Secretaries, Treasurers and Members of Arya Samaj & Arya Mahila Samaj

You are kindly informed that on the 12th June 2014, we are celebrating Satyartha Prakash Jayanti.

In this context we are soliciting your kind collaboration to disseminate the teachings of Satyartha Prakash to all Samaj Members, Arya Family, Hindi Schools as well as organizing such activities that would commemorate and explain the teachings to all especially students and youth.

काँ फूकरो हिंदी पाठशाला की पचासवीं वर्षगाँठ के अवसर पर

गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम राजकेश्वर परयाग

का सन्देश

आप सभी को मेरा सादर नमस्कार।

काँ फूकरो हिंदी पाठशाला की पचासवीं वर्षगाँठ के इस अवसर पर आप के बीच शामिल होकर मुझे लग रहा है कि मैं अपने ही घर में, अपने परिवार के साथ हूँ। मेरी खुशी और बढ़ गयी है क्योंकि ये हिंदी पाठशाला और आर्य समाज मंदिर मेरे दिल में बहुत खास जगह रखते हैं। आप जानते हैं कि १९७६ में यहीं से मेरी राजनीतिक यात्रा शुरू हुई थी। इसी जगह पर मैंने कई मीटिंग्स किए थे और उस समय मुझे जो सहयोग मिला उसके लिए मैं इस इलाक़े के लोगों का हमेशा आभारी रहूँगा ।

अपनों के बीच बातें भी अपनेपन के साथ की जाती है इसलिए आज मैं जो कहूँगा वो कोई स्पीच नहीं बल्कि मन की बातें होंगी ।

मित्रो !

काँ फूकरो प्रान्त के साथ मेरे बचपन की बहुत सी यादें जुड़ी हुई हैं। इसी रास्ते से हम लोग लकड़ी के लिए जाते थे, इसी रास्ते पर खेलकर हम बड़े हुए हैं। हमने अपनी आँखों से देखा है कि यहाँ की जनता ने कितनी मेहनत, कितने त्याग के बल पर इतनी तरक्की की है। यदि इस पाठशाला की दीवारें बोल सकतीं तो हमें बतातीं की उन्होंने यहाँ कितनी ग़रीबी देखी है। आज उसी काँ फूकरो में ऊँचे-ऊँचे पदों पर काम करने वाले लोग, विद्वान, डॉक्टर, अध्यापक भरे हुए है ।

उस ग़रीबी से इस तरक्की तक का सफ़र आसान नहीं था। लेकिन हम सभी ने उसे पार किया क्योंकि इस लंबे कठिन सफ़र में हमारे साथ तीन बड़ी शक्तियाँ रहीं।

हमारी पहली शक्ति हमारे माता-पिता और बुज़ुर्गों की मेहनत। ये उन बुज़ुर्गों के खून-पसीने का ही फल है कि उनको खुद कभी स्कूल जाने का मौका नहीं मिला था फिर भी आज उनके बच्चे बड़ी-बड़ी जगहों पर काम कर रहे हैं।

मित्रो, सफलता के लिए केवल मेहनत काफ़ी नहीं है। उसके लिए ये विवेक भी चाहिए कि मेहनत से मिले पैसे को कहाँ पर खर्च किया जाए। काँ फूकरो के लोगों ने देश भर के मेहनती लोगों के समान अपनी मेहनत का एक-एक पैसा अपने बच्चों की शिक्षा में लगाया। उन्होंने पहचाना कि अपने बच्चों को ग़रीबी से निकालने का एक ही रास्ता है – शिक्षा ।

बात यहीं पर समाप्त नहीं होती । जैसे कि स्वामी दयानन्द कहते हैं, 'शिक्षा का मतलब केवल कुछ किताबें पढ़ना नहीं है। शिक्षा तो आत्मा की गहराई तक पहुँचनी चाहिए ताकि मन की बुरी भावनाओं का नाश हो सके और भक्त का विकास हो सके । शिक्षा को सही रास्ता दिखाने के लिए संस्कृति, धर्म और मूल्य भी चाहिए।

यही हमारी तीसरी शक्ति थी और ये शक्ति हमें मिली हमारे धर्म से। स्वामी दयानन्द और आर्य समाज के गुरुओं ने कठिन समय में हमारे नवजवानों को डिसिप्लिन (discipline) दिया और अच्छाई का रास्ता दिखाया।

मित्रो !

काँ फूकरो की हिंदी पाठशाला ने इस आंदोलन में बहुत ही बड़ी भूमिका निभाई है। जब देश आज़ादी से पहले ग़रीबी और अन्याय सह रहा था तब रामरतन लछुआ, नन्दलोल परिवार, पंडित काशीनाथ किश्टो जैसे कई लोगों ने इस इलाक़े में आर्य समाज की पहली शाखा खोली। दुख के उस समय में जब समाज के पास कोई दिशा नहीं थी तब अमर वेद ग्रंथों की शिक्षा से ही समाज को आगे बढ़ने की शक्ति मिली ।

बात सीर्फ़ धर्म की नहीं थी। सर शिवसागर रामगुलाम ने कहा था कि यदि किसी धर्म का नाश करना हो तो उसकी भाषा को ख़त्म कर दो ! भाषा नहीं रहेगी तो धर्म भी नहीं रहेगा। दुखराम नन्दलोल जैसे समाज सेवियों ने इस बात को समझा, इसलिए उन्होंने १९६४ में यहाँ पर एक हिंदी पाठशाला की शुरुआत की। ध्यान दीजिए कि उन्होंने इस पाठशाला की स्थापना कुछ पाने के लिए नहीं की थी। उनका उद्देश्य समाज को कुछ देना था। इसलिए खुद ग़रीब होते हुए भी, बहुत कम रिसोर्सस (resources) होते हुए भी उन्होंने समाज की भलाई के लिए पाठशाला शुरू की। इस तरह आर्य समाज मंदिर और हिंदी पाठशाला ने काँ फूकरो के निवासियों के धर्म, संस्कृति और भाषा की रक्षा के लिए एक फॉरट्रेस (fortress) का काम किया।

आज इस पावन अवसर पर मैं नमन करता हूँ उन सभी लोगों को जिन्होंने अपना समय, अपनी ताक़त और अपना धन लगाकर अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा की। हमें इस बात पर भी गर्व है कि पचास साल बाद भी यह पाठशाला अपने मिशन (mission) पर अटल है और आज भी इस इलाक़े के बच्चे यहाँ अपने धर्म और संस्कृति की शिक्षा पा रहे हैं। मैं प्रधान श्री नन्दलोल और उनके सभी सहयोगियों को भी बधाई देना चाहूँगा जो इस विरासत को संभाले हुए हैं।

भाइयो और बहनो !

वैसे तो इस खुशी के अवसर पर मेरा संदेश इसी बधाई के साथ समाप्त हो जाना चाहिए था। लेकिन अगर मैं आपको इससे आगे की बातें नहीं कहूँगा तो मेरा कर्तव्य पूरा नहीं होगा। क्योंकि मेरा विश्वास है कि एक अच्छे समाज के निर्माण का काम अभी समाप्त नहीं हुआ।

स्वामी दयानंद ने सत्यार्थप्रकाश में बच्चों की शिक्षा पर बहुत बल दिया है। वे शतपथ ब्राह्मण का मंत्र 'मातृमान पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद।' लेकर समझाते हैं कि किस तरह एक बच्चे के जन्म से पहले से ही उसकी शिक्षा शुरु हो जाती है और माता-पिता के हर कर्म से, यहाँ तक कि भोजन से भी बच्चे का संस्कार होता है । इसलिए वे कहते हैं कि अच्छे माता-पिता द्वारा अच्छी तरह से पालन-पोषण ही बच्चे को उत्तम मानव बनाता है। स्वामी जी के अनुसार एक अच्छा समाज बनाने का यही रास्ता है।

मित्रो !

आज हमारे सामने यह प्रश्न है कि क्या माता-पिता अपने कर्तव्य को उसी तरह निभा रहे हैं? Or have we unfortunately left our children at the mercy of material forces that are guiding them towards moral bankruptcy? हमें यह नहीं समझना चाहिए कि जब हम लोगों ने इतनी प्रगति कर ली है और ग़रीबी से दूर हो गए हैं तो हमको अपनी भाषा, अपनी संस्कृति, अपने धर्म से कुछ नहीं लेना है।

सच मानिए मित्रो, ये हमारी सबसे बड़ी ग़लती होगी !

बहुत से माता-पिता अपने बच्चों को वो सुख देना चाहते हैं जो उनको खुद नहीं मिल पाया था। लेकिन माता-पिता का कर्तव्य केवल बच्चों को सुख के नाम पर घर, गाड़ी, गैजेट्स (gadget), टी.वी., मोबाइल (mobile) देना नहीं है। स्वामी दयानन्द समझाते हैं कि यदि माता-पिता बच्चों को जीवन का सही मार्ग नहीं सिखायें तो केवल सुख सुविधा से कुछ नहीं होगा। बच्चा अपने पैसे से सुख-सुविधा तो खरीद सकता है लैकिन सत्य, आदर, दया, भक्ति जैसे मूल्य उसको माता-पिता ही दे सकते हैं। इनके बिना वह बच्चा यह नहीं जान पाएगा कि पैसे, घर, टी.वी, गाड़ी और फोन आदि का सही इस्तेमाल कैसे करना चाहिए। वही गाड़ी उसको मंदिर भी ले जा सकती है और डिस्को भी। वही पैसा दान में भी दिया जा सकता है और उसी से जुआ भी खेला जा सकता है।

ये सारी प्रगति, घर, गाड़ी, टी.वी, फोन, पैसा, बिल्डिंग (building), टैक्नोलॉजी (technology) सब सभ्यता या मोडर्न सिविलाइज़ेशन (modern civilisation) हैं। ये सब मेटीरियल (material) हैं और हर रोज़ बदलते रहते हैं। दूसरी ओर हमारे मूल्य, हमारी भाषा, हमारे वेद, रामायण ये हमारी संस्कृति हैं । ये इटर्नल (internal) हैं। यदि प्रगति हमारी मंज़िल है तो वहाँ तक पहुँचने के लिए संस्कृति हमारी गाइडिंग लाइट (guiding light) है और अगर हम प्रगति के रास्ते पर अपने गाइडिंग लाइट को पीछे छोड़ दें तो आगे चलकर हम ज़रूर रास्ता भटक जाएँगे।

भाइयो और बहनो !

आज हमारा समाज और हमारी सभ्यता जिस तेज़ी से प्रगति कर रहे हैं उससे हमारी आने वाली पीढ़ी का रास्ता भटक जाने का खतरा बढ़ गया है और इस खतरे को देखते हुए ही हमको आज अपने उन गाइडिंग प्रिन्सिपल्स (guiding principles) की ज़्यादा ज़रूरत हो गयी है।

ऐसे में माता-पिता को अपनी ज़िम्मेदारी अधिक मज़बूती से निभानी होगी। उसके लिए आपको अपने तरीके भी बदलने पड़ सकते हैं। आज के नवजवान के साथ उसकी भाषा में बात करनी होगी। उसकी समस्या हमारे ज़माने की समस्या से अलग है। उसकी ज़रूरत भी और उसके सपने भी। लेकिन आपको उसे यह समझाना होगा कि चाहे समाज कितना बदल जाए, टैक्नोलॉजी कितनी भी आगे बढ़ जाए, हमारे गाइडिंग प्रिन्सिपल्स, हमारी संस्कृति हमेशा वही रहनी चाहिए।

मैं मंदिर और पाठशाला चलाने वाले अपने भाइयों से भी अनुरोध करूँगा कि आप समाज में इनकी भूमिका के बारे में फिर से सोचिए। बहुत ज़रूरी हो गया है कि मंदिर केवल हवन और प्रवचन का स्थान न रहे, हिन्दी पाठशाला सिर्फ भाषा की, शिक्षा की जगह न रहे। आज देश के हर मंदिर और पाठशाला को भाषा, संस्कृति और मूल्यों का एक मज़बूत लाइट-हाउस (light house) बनकर खड़ा होना चाहिए जो मेटीरियल सभ्यता की ऊँची लहरों के बीच से हमको इटर्नल संस्कृति की मंज़िल तक का रास्ता दिखाए। Because, even though material wealth and achievement can make us successful it is only our culture and values that can make our lives happy and this whole world meaningful.

मुझे आशा है कि आपकी संस्था समय की माँग के साथ नए रास्ते पर चलेगी और आने वाले पचास साल के लिए भी समाज में अपनी वही भूमिका निभाती रहेगी ।

आप सभी को इस अवसर की एक बार फिर से बहुत बहुत बधाई ।

आपके ध्यान के लिए धन्यवाद । नमस्कार ।

x x x x x x

अंधेरों में बन्द उजाला

इन्द्रेदव भोला इन्द्रनाथ

कितने गहन
अंधेरों की इस गहनता में
बन्द है उजाला
बादल घेरे हुए कालिमा पोत चुके हैं
सूर्य थक चुका है
उसकी प्रखरता मन्द पड़ गई है
विलुप्त हो गई है
आशा थी कि चाँद
अपनी स्निग्ध चाँदनी से उजाला
बिखेरेगा
वह ज्योत्स्ना कहीं डूब गई
अंधेरा ही अँधेरा
घबड़ाहट इतनी बढ़ी कि
प्रश्न पर प्रश्न उठने लगे
उत्तर पर उत्तर मिलने लगे
क्या अंधेरों में उजाला बन्द रह सकता
तो कब तक ?
सूर्यग्रहण लगता तो
क्या अंधेरा घटता नहीं ?
अमावस्या में चाँद निकलता नहीं तो
क्या पूर्णिमा में पूनम का चाँद नहीं
निकलता ?
अंधेरा कब तक रहता
वह भी उजाले को बन्द किये ?
उजाला तो फैलेगा ही
उजाले के आगे अंधेरे का अस्तित्व
चन्द घड़ी के लिए
तो घबड़ाहट कैसी ?

IN HOMMAGE TO PANDIT GURU DATTA VIDYARTHI

'Those who leave footprints in the sands of time, are undoubtedly men of extraordinary merits and exceptional capacities. And so was Pandit Guru Datta Vidhyarthi.' (Prof. Ram Prakash)

Pandit Guru Datta Vidyarthi was one of the most remarkable and outstanding among the innumerable followers of Maharishi Swami Dayanand Saraswati. Born to Mr and Mrs Lala Ram Krishan on the 26 April 1864 in the village of Multam, Pt. Guru Datta Vidyarthi emerged from to a very reputed family with a glorious past. One of his ancestors Raja Jagdish sacrificed himself to protect his people from foreign conquerors. The blood of such an intrepid warrior was running in the veins of Pt. Guru Datta.

Since childhood Pt. Guru Datta Vidyarthi possessed an extraordinary intelligence capacity. He was among the brilliant students of his class and studied up to M.A. He started studying Sanskrit late in life, and acquired such a mastery over the language that he could write and speak the language with ease and without mistake. He also studied Persian and read books on Christianity. He was nurtured in an environment where idol worship was a daily agenda. At a certain point of time the Hindu beliefs and knowledge of other religions aroused a spirit of scepticism in his mind, doubting the existence of god.

A first reading of the *first Edition* of the Satyartha Prakash of Maharshi Dayanand instilled in Pt. Guru Datta a strong attraction towards Vedic Dharma. He joined the Multan Arya Samaj on the 20 June 1880. That day is a milestone in the history of the Arya Samaj, marking a new era. His presence and powerful advocacy of the Vedic Dharma attracted quite a number of talented persons who became personalities of the Arya Samaj movement. Pt. Guru Datta was a very eloquent and impressive orator. It is through his debate *(Shāstrārtha)* that the youth Mehta Jaimini was impressed and was saved from becoming Christian. Mehta Jaimini later on became (Swami Jyananand) an international Vedic missionary who conveyed the message of the Veda throughout the world.

Pt. Guru Datta became a profound and respected Sanskrit Scholar. He initiated a campaign for learning Sanskrit. To the astonishment of all, a considerable number of persons of high calibre flooded to his place, amongst whom were Lala Munshiram, Pt. Leckram, Mehta Jaimini, Lala Lajpatrai and Lalah Narayan Das. Scholars refer to the exposes of Pt. Guru Datta on Vedic hymns and the Upnishads had such brilliance as was beyond the normal intellect.

9 October 1883 is another milestone: Lahore Arya Samaj deputed Lala Sivam Das and Pt. Guru Datta Vidyarthi to Ajmer to attend to Swami Dayanand ji who lay dying. That event changed the whole course of Pt. Guruduth Vidyarthi's life. This was the first time that he had seen the Great Reformer in his lifetime. Swamiji had also not seen him before and was wholly unaware of his capabilities. Pt. Guru Datta looked at Maharshi ji for hours in dumb surprise. A few minutes before his death, Swami ji asked all, except Pt. Guru Datta to retire. He witnessed the great reformer departing from this earthly world to join his divine father. The face of Swami ji was calm and had no fear of death.

This scene left a very deep and positive imprint on the mind of Pt. Guru Datta. All his doubts vanished. He realised that death is no terror on those who line up for truth; the soul is immortal; death means a change from one place to another. The edicts of Dharma anchored deeper in his mind. He devoted the rest of his life to the cause of Arya Samaj. He studied the Vedas and ancillary Vedic literature. He read the Satyartha Prakash no less than eighteen times and declared: *'Every time I read the Satyartha Prakash, I found something new and fresh in the way of mental and spiritual food.'*

After the demise of Maharshi Dayanand a proposal to set up a college in his memory was forwarded. Pt. Guru Datta left no stone unturned and to contribute in the foundation of the first DAV college at Lahore.

In spite of his very short life span, Pt. Guru Datta served the Arya Samaj ceaselessly and devotedly uncaring about his health. In the morning of 19 March 1889 at 07.00 hrs he breathed his last. A star of the first magnitude disappeared from the horizon of the Arya Samaj.

The Arya Patrika had a touching obituary notice under the heading *'Our Loss' – 'A man an uncommon man, a man extraordinary, a true deep and profound Sanskrit Scholar, a true descendent of the ancient Rishi has passed away. Pandit Guru Datta Vidyarthi, the pride and ornament of his country, the pride of all who value truth and knowledge for their sake is no more among us. Yes, that noble soul is no more in the flesh. We miss him all.'*

Prof. Ram Prakash who compiled and edited the book 'works of Pt. Guru Datta Vidyarthi' writes :- Pandit Guruduth Vidyarthi a renowned giant of knowledge, a Vedic research scholar par excellence and a towing genius, so noble and so promising yet cut off so early. Indeed the death of Pandit Guruduth Vidyarthi is a great loss to the mission of Arya Samaj.

Courtesy : ***Works of Pt. Guru Datta Vidyarthi by Prof. Prakash.***

Compiled by Shri Harrydev Ramdhony, Arya Ratna - Secretary Arya Sabha.

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1, Maharshi Dayanand St,
Port Louis, Tel: 212-2730,
208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी.,ओ.एस.के,आर्य रत्न
सह सम्पादक : सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के.,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी,*पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर,*पी.एम.एस.एम,*
आर्य भूषण, आर्य रत्न
(३) श्री नरेन्द्र घूरा,*पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

MOTHER'S DAY CELEBRATION - (A POEM)

MOTHER - DEAR

Sookraj Bissessur, B.A, HONS

Mother – (The heart which neither hits nor hurts)
A home does not make any mother.
A mother always- makes a home.
As the very echoes of the sea-waves.
My mother has always taught me how to be big and brave.
Emphasizing on these three words- (Just for to-day).
My mother has explained to me the following:-
Just for to-day- Do not be worry-
Just for to-day- Do not get angry-
Honour your- parents, teachers, elders and superiors.
Earn your living honestly!
Show gratitude to everybody.
When my mother-calls me-Oh! My Son!
It seems the entire world –calls me- Oh! My Son!
My mother- has always taught me:-
When in the alleys and valleys of darkness,
Whether you meet somebody or no.
Just stroll or walk on slowly and carefree.
My mother (Dear)- has always advised me :-
That when happiness is being entirely tinged,
With sorrow and sadness,
When bad time(s) become the part and parcel of life
When, at times, beauty is being suffocated by the very-
Nostalgia of nature
Then endeavour, try and search for satisfaction-
In each and every action.
Again, my mother has always told me that
Even in the desert(s) there are many fascinating-
And beautiful roses-
So, why can't all persons live as true sisters and brothers?
Mother (Dear) –in the very shadow of thy memory-
I'll surrender my vision.
Taking refuge- behind the veil of honesty and modesty-
From nature to religion-
From- Rock N Roll- to- Shakespeare-
From Shakespeare to- Brinty Speares
From Maharshi Dayanand, to-many other land(s),
Including my own Motherland
All had loved their Mothers!
To love you perenially and forever- (My Mother Sweet)-
Is my only aim-
Friendship towards you-is my game-
And Raj- is- my name.
I have always- learned from thee that-
Life is very short, demands are many.
Only Duty- But- no Beauty!
Thou have also taught me that:-
In illusion- and in any state of utter confusion-
Never take any hectic decision!
But I should always keep a smile on my lip(s).
That, even in any strong grief or acute pain-
In the track of time and dime- Life is just a train.
Thou art virtually- the very heart which-
Neither hits nor hurts.

OM

ARYA SABHA MAURITIUS

ESSAY COMPETITION

SATYARTHA PRAKASH MONTH (JUNE 2014)

TO : 1) Secretaries, Arya Yuvak Sanghs/Arya Samajs/Arya Mahila Samajs
2) Rector, Secondary Colleges / Schools

To mark the Satyartha Prakash Month (2014), the Arya Sabha Mauritius is organizing an essay competition in (i) Hindi, and (ii) English as follows :

CATEGORY : ABOVE 12, NOT EXCEEDING 15 YEARS BY 14.07.2014
Word Count : AROUND 700-800
Title [English] : Satyartha Prakash guidelines on education.
Title [Hindi] : सत्यार्थप्रकाश में निर्धारित शिक्षा पद्धति
CATEGORY : ABOVE 15 YEARS, NOT EXCEEDING 20 YEARS BY 14.07.2014
Word Count : AROUND 1500-1800
Title [English]: The contribution of the Satyartha Prakash towards the (i) physical, (ii) Spiritual and (iii) social uplift of mankind
Title [Hindi] : शारीरिक,आत्मिक और सामाजिक उन्नति में सत्यार्थ प्रकाश का योगदान
Closing date : 14 July 2014

Cash prizes for each category & language :

1st prize Rs 5,000.-
2nd prize Rs 3,000.-
3rd prize Rs 2,000.-

Instruction to participants :

1. Essays should be written/ word processed on A-4 paper, recto (one side only).
2. Participant should write their (a) names, (b) date of birth and (c) address on a separate sheet.
3. Envelopes should be marked **ESS-COM/SP/2014** on the top left hand corner.
4. Essays should reach The Secretary, Arya Sabha Mauritius, 1 Maharishi Dayanand Street, Port Louis by Monday **14 July 2014 at 3.30 pm** the latest.

Note :

- *Arya Sabha Mauritius reserves the right not to hold any competition following this advertisement.*
- *The winners' names and essays will be published in the weekly newspaper "ARYODAYE".*
- *Special 15% discount on all Satyartha Prakash books available at Arya Sabha Mauritius.*

H. Ramdhony
Secretary